Research Article

चंद्रकांत देवताले के कविता में बिम्ब विधान

चंदू खंदारे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गांधीग्राम, जि.डिव्हीगुल (TN)

प्रस्तावना :

समकालीन हिंदी कविता में जिन कवियों के नाम लिए जाते है उनमें चंद्रकांत देवताले महत्त्वपूर्ण है। चंद्रकांत देवताले ने समकालीन कविता के तेवर को तराशने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपने दायित्व के प्रति पूर्णरुप से जुडा हुआ यह कवि इस देश के आम आदमी के जीवन को उसके अनुभवों और यातनाओं को अपनी कविताओं में व्यक्त करता है।

किसी भी कलाकृति के मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक विवेचन के लिए उसमें प्रयुक्त प्रतीकों और बिम्बों को विश्लेषित करना आवश्यक होता है। प्रतीक और बिम्ब अर्थ के स्त्रोत हेाते है और साथ ही कवि के सम्वेदनात्मक उदेश्य को रुपायित करते है। जब उन्हें एक बार सही सन्दभों में जान लिाया जाता है तो कविता की अर्थ प्रक्रिया खुलने लगती है। चंद्रकांत देवताले □ बिम्बों □ विषय में भी यही बात पूर्णरुप से घटित होती है। उनके बिम्ब ही उनके अर्थ के स्त्रोत है। उन्हें बिना जाने चंद्रकांत देवताले की कविता सिर्फ 'स्वप्न की रचना' लगेगी। इसलिए उनके काल में जो बिम्ब आए है उन पर विचार करना जरुरी है। परंतु उससे पहले बिम्ब के बारे में थोडी चर्चा करना जरुरी है।

बिम्ब :

संसार के सभी मनुष्य बाहय जगत के सौन्दर्य का उपयोग किसी न किसी रुप में करते हैं, किंतु मात्र कलाकार ही ऐसा प्राणी है जो जीवन के इस बाहय सौन्दर्य को अन्तस के माधुर्य या आन्तरिक सुषमा से पुष्ट करके उसे द्विगणित सौंदर्य तथा अदिम कान्ति प्रदान करने में सक्षम है। वह उस वस्तु अथवा भव्य जगत के सूक्ष्मतम अंशो को प्रभावात्मक बनाने के लिए मूर्त या गोचर रुप विधान करता है। विभिन्न □लाओं में 'साहित्य' ही भावाभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है तथा सहित्य में भी काव्य ही सर्व समर्थ माध्यम है, जिसका कारण यह है कि कवि जटिल भाव को 'शब्द' जैसे मुर्त माध्यम में बांधकर सहृदय करे में समर्थ होता है। शब्द की इस चित्रमयी शक्ति में काव्य में 'बिम्ब' (इमेज) को जन्म दिया।

डॉ.नगेन्द्र ने बिम्ब सम्बधी उलघनों को सुलझाने के प्रयास में बिम्बों को पाँच वर्गो में विभाजन किया है-

१) □-द्रीय बिम्ब : (पाँच ज्ञानेन्द्रियों से सम्बधित)
२) लक्षित एवं उपलक्षित बिम्ब.
३) सरल एवं संश्लिष्ट बिम्ब.
४) □ण्डित एवं समाफलित बिम्ब
५) वस्तु परक एवं स्वछंद बिम्ब.

डॉ.नगेन्द्र का यह वर्गीकरण पूर्णत: मान्य नहीं है कि काव्य सम्वेदना, अनुभूति, भावना या विचार किसी एक पर आधारित न होकर इन सबसे अन्त: ग्रंथस का जीवन रुप के सभी एकांगी हैं, किसी में काव्य-रचना की प्रक्रिया का बाहय पक्ष उभरा है, तो किसी में आत्मरिक पक्ष। डॉ.नगेन्द्र के वर्गीकरण में कुछ कमिया है इसके बावजूद भी उनका वर्गीकरण अधिक वैज्ञानिक और तर्कसम्मत होने के करण हिंदी में उनका वर्गीकरण अधिक प्रचलित है। इस वर्गीकरण के आधारपर चंद्रकांत देवताले के काव्य में बिम्ब विधान पर विचार करने से स्पष्ट है कि वहाँ प्राय: सभी प्रकार के बिम्ब मौजूद है।

आदिम बिम्ब :

आदिम बिम्ब पुराणकालीन वस्तुओं, अनुभूतियों, संस्कारों और प्रवृतियों के बिम्ब है। जो बिम्ब प्रारम्भिक युग से अब तक मनुष्य के सामूहिक मन में संचित है और अनूकुल अवसर पाकर चेतना के स्तर पर प्रतिबिम्बित हो उठते हैं।

चंद्रकांत देवताले एक चिन्तनशील कवि है। आदिम जीवन के केन्द्रिय बोध के प्रति उनका जन्मजात आकर्षण है। वैसी उनकी प्राय: अनेक कविताओं में बिम्बों, प्रतीकों में यह आदिम आकर्षण स्थान पर प्रकट होता है। उनकी अनेक कविताओं में आदिम बिम्ब हमें देखने मिलते है-

"खाली हाथ और भरे मन। रेत के उपर आकाश के नीचे।
□हरे की नदी में चित लेटे हुए। मैं सुर्य माँगता हूँ, मुझे बर्फ मिलती है।
सिर्फ वही शब्द नहीं मिलता। शेष समय की भट्टी में अतिरिक्त शैकडों शब्द सेंकता हूँ।
वैसे फेंकता हूँ अपने को। शहरों के बीच, सडको पर, लोंगों के भीतर।"
(दीवारों पर □ून से, पृ.९)

इस कविता में चंद्रकांत देवताले सूर्य और बर्फ जैसे आदिम बिम्बों का उपयोग करते है।

जीवन्त बिम्ब :

यह बिम्ब आधुनिक युग की देन है। औद्योगिक और वैज्ञानिक युग की उपलब्धियों का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करनेवाले बिम्बों को 'जीवन्त बिम्ब' कहा गया है। चंद्रकांत देवताले के काल में औद्योगिक वैज्ञानिक विकास चश्मीत्कर्ष पर है इस कारण उनकी कविताओं में 'जीवंत बिम्ब' उभरकर आए है-

"कारखाने जरुरी है। कोई अफसोस नहीं
आदमी आकाश में सडके बनाए। कोई दिकत नहीं
पर वह शैतान। उसके नाखून.. भयानक जबडे..
वह शहरों -गावों पर मंडरा रहा है
और हमारी परोपकारी संस्थाएँ
हर घर से उनके लिए
जीवंत मांस की व्यवस्था कर रही हैं।
(पत्थर की बैंच, पृ.७३-७४)

प्रतिभा बिम्ब :

बिम्ब का निर्माण और उसका प्रस्तुतीकरण कवि की कल्पनाशीलता पर निर्भर करता है। प्रतिभाशील कवि में बिम्ब विधान और उसकी अभिव्यंजना की क्षमता अधिक होती है, जिसके कारण उसके बिम्ब बिलकुल नये शाश्वत मूल्यों से युक्त होते है। इस कोटि का कवि किसी पूर्व परम्परा के धरातल पर खडा न होकर अपनी विशिष्ट कल्पनाशक्ति या यों कहें कि अपनी प्रतिभाशक्ति के बिना पूर्व ज्ञान के बिम्ब के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अवयवों का उद्घाटन करता है। प्रतिभा कवियोंद्वारा प्रस्तुत बिम्ब स्वत: प्रस्तुत करते है।

चंद्रकांत देवताले के काव्य से उनकी विलक्षण कल्पना शक्ती का परिचय मिलता है। उनमें बिम्बों की क्षमता इतनी है □ शाश्वत मूल्यों से युक्त बिम्ब भी बिलकुल नए प्रतीत होते है-

"पेडों का हरापन मनुष्यों की। भरी मूरसह दुनिया में,
विचाटन के विरुध्द। पानी की हलचल है,
पानी की हाथों की तरह। पेडों की टहनियाँ,
लगातार हिलती है।
(लकड बग्घा हँस रहा है, पृ.७०)

इसी प्रकार उनकी दूसरी कविता हैं-'औरत' इस कविता में भी कवि प्रतिभा बिम्ब का निर्माण करते हैं-

"एक औरत अनन्त पृथ्वी को। अपने स्तनों में समेटे
दूध झरने बहा रही है। एक औरत अपने सिर पर
घास का गठ्ठर रखे कब से धरती को
नापती जी जा रही हैं।
(लकड बग्घा हँस रहा है, पृ.११)

ण्डित बिम्ब :

जब कवि अन्योक्तिमूलक प्रतिकात्मक बिम्बों की रचना करता है, तो उसे सांकेतिक बिम्ब कहते हैं। ये बिम्ब खण्डित और प्रतीयमानअर्थयुक्त होते है।

"मेज पर घुस आई धूप और हवा के बीच।
रखी हुई है ब्लेड जब मेजपर।
डबल रोटी भी पडी है ताजे फूलों के गुच्छों के पास।
इस वक्त जब फुलों और डबल रोटी के बीच।"
(लकड बग्घा हँस रहा हैं, पृ.८०)